# OSDAV Public School, Kaithal

**Pre-Board Exams (2024-25)**

**Set- B**

**Class : XII**

**Subject :Music**

**Time: 2:00 Hrs .** **M.M. : 30**

**General Instructions:-**

I. **All questions are compulsory.**

| | खंड-क | Marks |
|---|---|---|
| | **1स्पर्श स्वर किसे कहते है!**<br><br>**1.वर्ण 2.मींड 3.मुर्की4. कण**<br><br>**Ans. कण**<br><br>**2.मसितख़ानी गत कौन सी लय में बजाई जाती है।**<br><br>**1.विलम्बित 2.मध्य 3. द्रुत4. अतिद्रुत**<br><br>Ans. **विलम्बित**<br><br>**3.सुबह के समय कौन सा राग गाया जाता है!**<br><br>**1.मालकौस 2.सारंग 3.भैरव 4.कल्याण**<br><br>**Ans. भैरव**<br><br>**4.संगीत रत्नाकर किस की रचना है!**<br><br>**1.भरतमुनि 2.मतंगमुनि 3.शारंगदेव जी 4.अहोबल**<br><br>Ans. **शारंगदेव जी**<br><br>**5.उस्ताद बड़े गुलाम अली खां का जन्म कब हुआ!**<br><br>**1.1902 2.1903 3.1905 4.1907**<br><br>Ans.**1902** | **8x1=8** |

| | | |
|---|---|---|
| | **6.रूपक ताल की ख़ाली किस मात्रा में है !**<br><br>**1.तीसरी 2.पाचवी 3पहली 4.सातवी**<br><br>**Ans. पहली**<br><br>**7 तानपुरे में कितनी तारे होती है!**<br><br>**1.चार 2.दो 3.तीन 4. एक**<br><br>**Ans. चार**<br><br>**8. राग मालकौस की जाती कौन सी है!**<br><br>**1.ओडव- षाडव 2.षाडव- षाडव 3.ओडव- ओडव 4.ओडव- सम्पूर्ण**<br><br>**Ans. ओडव- ओडव** | |
| | **खंड - ख** | |
| | **1.निम्न में से किसी दो को परिभाषित कीजिए**<br><br>**1.तान 2.मींड3.मूर्छना4.अलंकार**<br><br>**Ans. तान**<br><br>**तान का अर्थ है विस्तार करना। इससे राग का विस्तार होता है तथा चमत्कार की उपज होती है। किसी राग के स्वरों को द्रुत लय तथा आकार में गाने को तान कहते हैं। आलाप और तान में केवल गति का अंतर होता है अगर आलाप को द्रुत लय में गाया बजाया जाए तो वह तान ही कहलाएगा। आलाप की लय धीमी होती है और आलाप भाव प्रधान होते हैं। तान की लय द्रुत होती है और तान चमत्कार और कलाा प्रधान होती है।**<br><br>**2. मीड**<br><br>प्राचीन गमक का **एक प्रकार है किसी एक स्वर से दूसरे स्वर पर आवाज को बिना खंडित करते हुए जाने को मिंड कहते हैं जैसे स से म तक जाते हुए रे ग को सिर्फ स्पर्श मात्र करना होता है इन स्वरों पर रुकना नहीं होता है यह स्वर अलग-अलग सुनाई नहीं पड़ते मिड के लिए स्वरों के ऊपर उल्टा अर्धचंद्र बनाते हैं जैसे स म मिड से गायन वादन में रंजकता तथा कोमलता अधिक रूप में आ जाती है ।**<br><br>**3. मूर्च्छना** | **8X1=8** |

| | | |
|---|---|---|
| | **मूर्च्छना** शब्द मूर्छ धातु से उत्पन्न हुआ है जिसका अर्थ है चमकना या उभरना तो **मूर्च्छना** का अर्थ हुआ चमकते या उभरती हुई वस्तु।<br><br>पंडित ओंकार नाथ ठाकुर जी के अनुसार चमकीली या उभरती हुई वस्तु को **मूर्च्छना** कहते हैं।<br><br>पंडित **शारंग** देव जी के अनुसार **मूर्च्छियते येन** रा**ग :**अर्थात जिस**से** राग चमकते उभरते तथा पैदा होते हो उसे **मूर्च्छना** कहते हैं।<br><br>भरत मुनि के अनुसार सात स्वरों के क्रमानुसार आरोह अवरोह करने को **मूर्च्छना** कहते हैं।<br><br>**4.अलंकार**<br><br>अलंकार संस्कृत भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है **आभूषण या कहना जिस प्रकार आभूषण या गहनों से हम अपने शरीर को सजाते हैं उसी प्रकार अलंकारों से संगीतकार गायन और वादन को सजाते हैं अलंकार एक नियमित क्रम में होते हैं किसी भी अलंकार का अवरोह उसके आरो का उल्टा होता है जैसे आरो**ह: **स रे ग म प ध** नी **स**<br><br>**अवरोह: स** नी **ध** प **म ग रे स** | |
| | **2.गमक किसे कहते है कितने प्रकार की है।**<br><br>**Ans. गमक शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के गम धातु से हुई है जिसका अर्थ है चलना जब स्वरों को गंभीरता पूर्वक गाया या बजाया जाता है तो उसे गमक कहते हैं पंडित शारंग देव जी अपने ग्रंथ संगीत रत्नाकर में लिखते हैं स्वरों के ऐसे कंपन को गमक कहते हैं जो श्रोता के चित् को सुख देता है प्राचीन काल में गमक के 15 प्रकार माने जाते हैं**<br><br>**1. आंदोलित**<br><br>**2. लीन**<br><br>**3. प्लावित**<br><br>**4.कंपित**<br><br>**5. स्फूरित**<br><br>**6. तिरिप**<br><br>**7. वली**<br><br>**8. करूला**<br><br>**9. मुद्रित** | **2*5=10** |

| | | |
|---|---|---|
| | **10. गुमफ़ीत**<br><br>**11. त्रिभिन्न**<br><br>**12. आहत**<br><br>**13. उल्लासित**<br><br>**14. मिश्रित** | |
| | **3.संगीत पारिजात ग्रंथ का विवरण दीजिए।**<br><br>**Ans. यह ग्रंथ 1650 में पंडित अहोबल जी द्वारा लिखा गया जिसका अनुवाद फारसी भाषा में पंडित दीनानाथ जी ने किया यह ग्रंथ अपने समय का महान ग्रंथ माना जाता है पंडित अहोबल जी पहले संगीतकार थे जिन्होंने संगीत परिजात में वीणा पर स्वर स्थान निश्चित करने के लिए एक नई पद्धति बनाई यह ग्रंथ मंगलाचरण से शुरू होता है इसमें कुल 8 अध्याय हैं संगीत परिजात में कुल 500 श्लोक है** | |
| | **4.ताल रूपक का परिचय देते हुए एकगुण दुगुण ताल लिपिबद्ध कीजिए**<br><br>**Ans. ताल रूपक की सात मात्राएं होती हैं पहले विभाग तीन मात्राओं का दूसरा और तीसरा विभाग दो-दो मात्राओं का होता है यह एकमात्र ऐसी ताल है जिसके सम पर खाली है चौथी और छठी मात्रा पर ताली है इस ताल का प्रयोग शास्त्रीय और सुगम संगीत में किया जाता है यह तबले की ताल है इस ताल में गायन के सभी प्रकार जैसे राग गीत गजल तथा भजन आदि गाए जाते हैं।** | |
| | **5.राग बागेशवरी राग का परिचय लिखिए।**<br><br>**Ans. थाट=काफी**<br><br>**स्वर=ग _नी कोमल बाकी स्वर शुद्ध**<br><br>**वादी स्वर=म**<br><br>**संवादी स्वर=स**<br><br>**जाति=ओडव _संपूर्ण**<br><br>**गायन समय: रात का दूसरा पहर** | |
| | **खंड -ग** | |
| | **1.तानपुरा किसे कहते है तानपुरा कितने प्रकार का है तथा तानपूरे के ढांचो के नाम लिखो**<br><br>**Ans. तानपुरा भारतीय शास्त्रीय संगीत का आधार है जिसमें माना जाता है कि इस वाद्य का आविष्कार तुमरू नामक गंधर्व ने किया है तानपुरा का वर्णन सबसे पहले पंडित अहोबल द्वारा रचित ग्रंथ संगीत परिजात में मिलता है प्राचीन ग्रंथो में इसका वर्णन नहीं मिलता प्राचीन मूर्तियों में वीणा के चित्र तो मिलते हैं परंतु तंबूरे का चित्र नहीं कुछ लोग इसे एक तारा** | **6*2=12** |

| | | |
|---|---|---|
| | या एक तांत्रिक वाद्य का विकसित रूप मानते हैं आईन-ए- अकबरी पुस्तक में अबुल फजल ने तंबूरे को स्वर वीणा कहा है<br><br>तानपुरा के दो प्रकार प्रचार में है !<br><br>एक पुरुषों का तानपुरा दो स्त्रियों का तानपुरा इन दोनों प्रकार में कोई विशेष अंतर नहीं है पुरुषों का तानपुरा थोड़ा बड़ा होता है उसकी तारे मोटी होती है और स्त्रियों का तानपुरा थोड़ा छोटा होता है और उसकी तारें पतली होती हैं जबकि इनको पकड़ने बजाने और स्वर मिलाने की विधि एक जैसी होती है। तान पूरे के ढांचे का ज्ञान :<br><br>1.तुंबा- यह सुख तुंबे के खोल से बना होता है ऊपर से चपटा वह नीचे से गोल होता है ।इससे तान पूरे की आवाज और गुंज पैदा होती है।<br><br>2. तबली -तांबे के ऊपर का भाग काटकर उसके खोखले भाग को लकड़ी के टुकड़े से ढक दिया जाता है !जिसे तबली कहते हैं !<br><br>3. ब्रिज- यह तबली के ऊपर हड्डी की बनी हुई चौकी के आकार का होता है। इसे घुडच या घोड़ी भी कहते हैं। इसके ऊपर चारों तारे रखे जाते हैं ।<br><br>4. सूत या धागा- ब्रिज के ऊपर तारों के बीच सूत या धागों का प्रयोग करते हैं। इससे तानपुरे की झंकार बड जाती है ।<br><br>5. मोगरा या लंगोट -तारों को बांधने के लिए तांबे के नीचे के भाग में तिकोनी पट्टी होती है जिसे मोगरा या लंगोट कहते हैं।<br><br>6.डांड-लकड़ी का खोखला डंडा जो तुंबे के साथ जुड़ा होता है एक तरफ कुंडिया लगी होती है जिससे तारे खींची रहती हैं ।<br><br>7.गुल्लू -डांड और तुम्बे के जोड़ के स्थान को गुल्लू कहते हैं ।इसे गुल भी कहते हैं।<br><br>8 अट्टी-तान पूरे के ऊपरी भाग पर हाथी दांत की दो पत्तियां होती हैं। पहले पट्टी जिसके ऊपर तार रखे जाते हैं उसे अट्टी कहते हैं।<br><br>9.तार गहन-दूसरी पट्टी जिसके नीचे से तार निकाल कर खुटियो से बांधे जाते हैं उसे तार ग्रहण कहते हैं ।<br><br>10 खूंटियां -यह तानपूरे के ऊपरी भाग में होती है ।यह चारों तारे स्वर करने के लिए होती हैं। . | |
| | 2.उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ का परिचय लिखिए।<br><br>Ans. उस्ताद बड़े गुलाम अली खान साहब का जन्म पिता अली बख्श खान के घर 2 अप्रैल 1902 को कसूर पाकिस्तान में हुआ इनके पिताजी उसे समय के जाने माने सारंगी वादक और गायक थे। इन्होंने संगीत की शिक्षा पहले अपने चाचा काले खाँ से ली जो अच्छे गायक और | |

| | | |
|---|---|---|
| | कंपोजर थे कुछ समय बाद उनकी मृत्यु हो गई और फिर बड़े गुलाम अली खान अपने पिताजी से शिक्षा लेने लगे इन्होंने अपने पिताजी से सारंगी भी सीखी ।<br><br>सारंगी से इनको अच्छी आमदन होने लगी और घर का खर्च बढ़िया चलने लगा ।सारंगी के साथ-साथ इन्होंने अपने गायन से पंजाब के लोगों को काफी प्रभावित किया कुछ समय बाद आप अपने पिताजी के साथ उस्ताद सिंधी खाँ से गायन सीखने मुंबई आ गए। थोड़ी देर बाद वापस लाहौर चले गए तब तक उनकी प्रसिद्धि काफी बढ़ गई थीलेकिन पहले प्रसिद्ध इनको 1940 में कोलकाता के संगीत सम्मेलन में प्राप्त हुई 1943 में गया जी के संगीत सम्मेलन में 1944 में मुंबई के संगीत सम्मेलन में 1944 में ही बिहार और बंगाल के संगीत सम्मेलन में इनको बहुत प्रशंसा मिली। सन 1945 में महात्मा गांधी जी ने इनको प्रशंसा पत्र दिया। 1946 में आकाशवाणी से इनके प्रोग्राम प्रसारित होने लगे आप रियाज करने पर बहुत जोर देते थे। कहते थे कि आप रोज 20 घंटे रियाज करते थे आप कानून नमक साज बजाते थे और अपना रियाज इसी के साथ ही करते थे। 1947 के विभाजन के बाद आप भारत छोड़कर कराची पाकिस्तान में रहने लगे ।परंतु कभी-कभी संगीत सम्मेलन में भाग लेने के लिए भारत आया जाया करते थे। किंतु पाकिस्तान में इनका मन नहीं लगा ।भारत सरकार से विनती करने पर आप मुंबई में पक्के तौर पर रहने लगे गायन में अपने पंजाब अंग की ठुमरी को जोड़ दिया आए ना बालम और तिरछी नजरिया के बाण याद पिया की आए इनकी ठुमरिया बहुत प्रसिद्ध हुई। 1962 में आपको संगीत नाटक अकादमी अवार्ड मिला।<br><br>1962 में ही पद्म भूषण से भी नवाजे गए फिर लंबी बीमारी के बाद आप 23 अप्रैल 1968 को बशीर बाग पैलेस हैदराबाद में दुनिया को अलविदा कह गए उनकी याद में इनकी शागिर्द मालती गिलानी ने इनका संगीत जिंदा रखने के लिए बड़े गुलाम अली खान यादगार सभा बनाई है जो हर साल ठुमरी फेस्टिवल और सब रंग उत्सव उच्च स्तर के प्रोग्राम करवाती है। | |